सत्य साहित्य

वर्ष 7 / अंक 1
अक्टूबर 2023
Year 7/ No. 1
October
2023

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

गजेन्द्र स्तुति

हे गोविंद हे गोपाल, अब तो जीवन हारे
हे गोविंद राखो शरण, " " " "

(1) नीर पीवन हेतु गयो सिन्धु के किनारे
सिन्धु बीच बसत ग्राह चरण धरि पछारे. हे...

(2) चार प्रहर युद्ध भयो, लै गयो मंझधारे
नाक कान डूबन लागे, कृष्ण को पुकारे. हे....

(3) द्वारिका में शब्द गयो, शोर भयो भारे
शंख चक्र गदा पदम, गरुड़ ले पधारे. हे...

कीर्तन जय जय श्री कृष्ण चन्द्र नन्द के दुलारे
नन्द के दुलारे यशोदा के प्यारे
नन्द के दुलारे भक्तों के प्यारे
यशोदा के प्यारे ओ मुरली वाले !!

कीर्तन :- जय जय गोविन्द, जय जय गोपाल !!

(4) सूर कहे श्याम सुनो शरण हैं तिहारे
अब की बार पार करो नन्द के दुलारे
हे.... अब तो जीवन हारे

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- बधाई
- शरणागति
- श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण
- आप बीती
- विभिन्न केन्द्रों से
- बच्चों के लिए
- कैलेन्डर

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

दीपावली की बधाई

May His light dispel darkness of ignorance.
May we live in Him & His Prakash.
Best wishes for a very very
happy Diwali; congratulations too.

Loving Jai Jai Ram to all of you

S. S.

उसकी ज्योति अज्ञानता के अंधकार को दूर करे। हम उसमें और उसके प्रकाश में रहें। दीवाली की बहुत, बहुत शुभ कामनाएँ और बधाई भी। सप्रेम जय जय राम आप सब को।

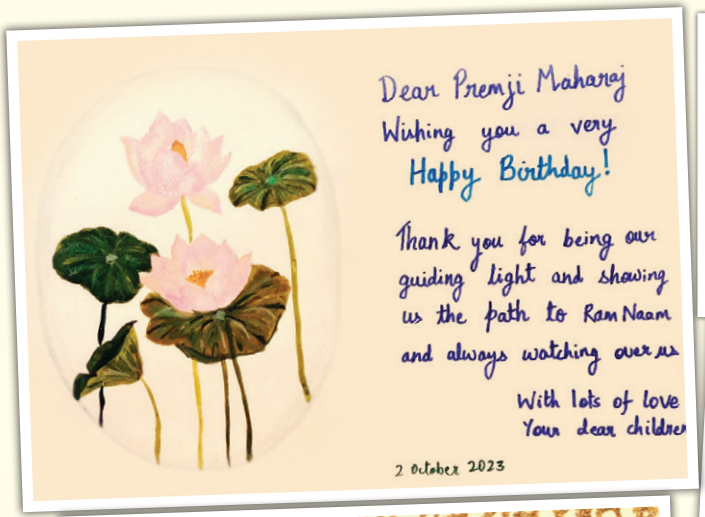

Surrender

सत्यानन्द

O Omnipresent Lord, O Remover of Sin, with folded hands and head bowed in reverence at the shelter of Your Lotus Feet, I salute you countless number of times in all the ten directions in all the three auspicious times, sunrise, noon and sunset. [1]

O Lord of the Universe, the Remover of Obstacles and the Giver of Prosperity, the Saviour from the Cycle of Birth and Death, I take refuge in you.

O Auspicious Beneficent One, the Embodiment of Peace, Refuge and Bliss, the Ultimate Abode of Supreme Peace, the Asylum of one and all, grant me shelter at Your Lotus Feet. [2]

Knowing us to be wretched and poor, lying prostrate at Your Lotus Feet, O Saviour of the fallen! Bethink Your Stature and Magnificence and, being unmindful of our vices and failings, redeem us of our sins and grant us salvation.

O Lord, verily you protect the honour of those surrendered at the sanctuary of Your Lotus Feet and save them from shame and disgrace. You are our Ultimate Mainstay, our One and Only Hope, Refuge, Reliance and Assurance.

O Lord, may your devotees develop a sense of assuredness and conviction in You alone. May their belief remain unshakeable, unwavering and unyielding even under the most dire circumstances.

O God Almighty, the One without a Second, bowing my head on the ground in reverence and with heart overwhelmed with devotion, I pay you my most devout obeisance and humbly offer you my gift of devotional sentiments and spiritual dedication.

O Lord, prostrating myself before you, with great deference and humility and a heart full of love, I offer my body, mind and wealth at Your Lotus Feet.

O my Lord Ram, I am fully surrendered, my mind, speech, action, pious and good deeds all included, at the shelter of Your Lotus Feet.

O Lord of the Universe, I dedicate my intellect, reasoning, knowledge along with all my spiritual practices and religious observances to you.

O Ram, Primordial Sound and Formless One, the Ultimate Essence of Bliss, may my sincere surrender be accepted at the refuge of Your Lotus Feet.

(Translation from Bhakti Prakash,_Puja Paath_Doha No. 27-37)

---

[1] *(हरि) Hari refers to: A name of God; one who accepts oblations, or the remover of sin; one who removes all obstacles to spiritual progress.*

[2] *(शिव) Shiv is a Sanskrit word meaning "auspicious, propitious, gracious, benign, kind, benevolent, friendly".*
(शंकर) Shankar is a Sanskrit word meaning "beneficent" or "giver of bliss". ■

Pray do look after yourself & keep on Surrendering unto HIM. May blessings of Shri Ram be always upon you. Lots & Lots & lots of Love Prem

समर्पण

प्रेम

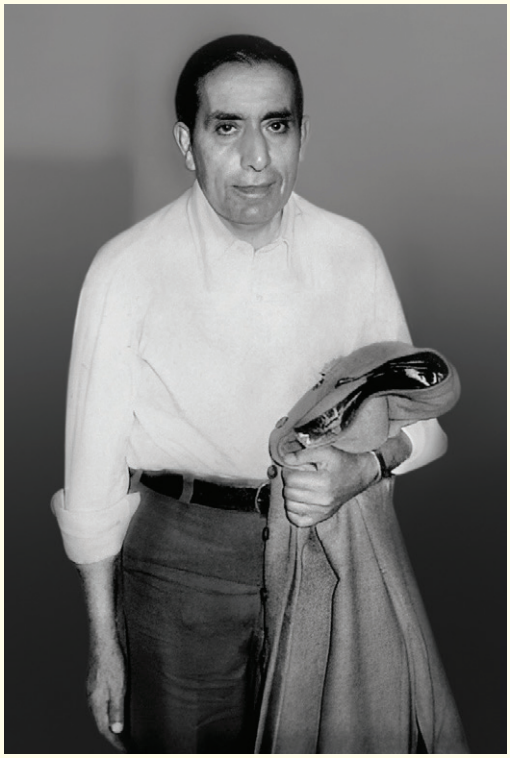

भगवान् कृष्ण जी कहते हैं कि हे अर्जुन, तू मुझे अपना मन अर्पण कर दे। सब वासनाओं की जड़ मन है। जनक जी ने भी अपना मन अपने गुरु को अर्पण कर दिया था। व्यक्ति को अपना काम करना चाहिये और फल की इच्छा न रख कर उसको परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिये। जिसने अपना मन ही परमेश्वर की कृपा पर अर्पण कर दिया हो उसको परमेश्वर की कृपा पर पूर्ण विश्वास होता है। डाँवाडोल स्थिति उसी पुरूष की होती है जो मन को विचरने देता है और उसको पूर्णतया प्रभु के हवाले नहीं करता है। जैसे बच्चा माँ के समीप होते हुए नहीं घबराता है और अपने आपको पूर्ण रूप से सुरक्षित पाता है। इसी प्रकार से जो व्यक्ति अपने मन को सर्वथा परमेश्वर को समर्पित कर देता है। वह अपने आपको परमेश्वर की कृपा से सुरक्षित पाता है। राम की कृपा सब पर हो।

'परमेश्वर के नाम का आराधन करते समय अपने आपको उसी की शरण में अर्पित मानना चाहिये। जब श्री राम दरबार में पहुँच गए तब फिर सांसारिक बातों के लिये व्याकुल होना तो श्री राम कृपा की अवहेलना करना ही है। जिस प्रकार हमारे लिये शुभ होता है, उसी हालत में भगवान् हमें रखता है। ये भी दृढ़ निश्चय होना उचित है।'

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के प्रवचन 5.7.1971) ■

शरणागति

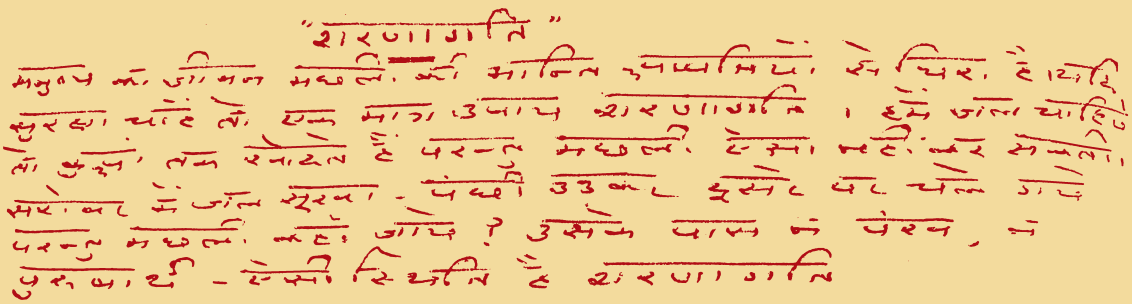

Man's life is very much like that of a fish surrounded by difficulties. If he desires protection then the one and only means is to surrender and seek refuge in God. To quench our thirst we will even go so far as to dig a well but the fish cannot do that. When the water in the lake dries up, the birds fly and go elsewhere, but where will the fish go? It neither has wings nor exertion- such a state is Sharnagati (total surrender).

मैंने रख दिया अपना आप राम तेरे चरणों में, मुझे कर लो माँ स्वीकार अपने चरणों में

पूजापाठ के अन्तर्गत आज पूज्यपाद स्वामी जी ने इस प्रसंग को समर्पण के साथ सम्पन्न किया है। भक्ति की पराकाष्ठा है –समर्पण। भक्ति की पराकाष्ठा है शरणागति। जब अपना तन–मन–धन, इंद्रियाँ, प्राण, कर्मकलाप, बुद्धि, कर्तृत्व सब कुछ परमात्मा के श्री चरणों में समर्पित कर देता है व्यक्ति, तो इसे समर्पण कहा जाता है, शरणागति कहा जाता है। सत्य ये है कि ये अन्तिम सीढ़ी है, इसके बाद व्यक्ति

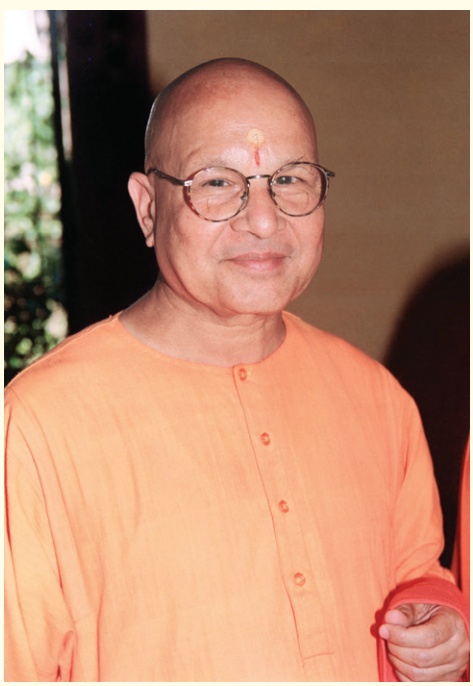

को कुछ करना नहीं पड़ता। जो कुछ उसने करना होता है कर दिया होता है। अब परमात्मा की बारी है करने की। अब सिर्फ वह परमात्मा के आश्रित है। अनन्य भक्ति क्या है, ये समर्पण, ये शरणागति क्या है? व्यक्ति परमात्मा के सहारे अपना जीवन व्यतीत करता है और उसी के भरोसे रहता है। उसी परमात्मा की कृपा, वात्सल्य एवं करुणा के अतिरिक्त और किसी का सहारा नहीं है। वह संसार

का सहारा नहीं लेता, अपनी कमाई का सहारा नहीं लेता, न ही बाह्य सहारा है, न ही भीतरी सहारा है, उसे केवल एक मात्र सहारा है – परमात्मा का सहारा। इसे समर्पण कहा जाता है। कुछ न करने की स्थिति। इसका अर्थ ये नहीं समझिएगा कि व्यक्ति निष्क्रिय हो जाता है, व्यक्ति हाथ पाँव मारना बंद कर देता है। नहीं, यह बिल्कुल सत्य नहीं है। ये शरणागति के प्रति, ये समर्पण के प्रति भ्रांति है हमारी। इसे दूर करने की आवश्यकता है। यूँ कहिएगा कि जब एक बूँद सागर में जा कर मिल जाती है या एक नदी या नाला, सागर में जा कर मिल जाता है तो वह सागर की तरह ठाठें मारता है। सागर उसे चैन नहीं लेने देता, ये शरणागति –ये समर्पण बिलकुल वैसी ही स्थिति है। कैसी स्थिति है ? परमेश्वर उस व्यक्ति को अपने साथ मिला कर तो अपने जैसा ही बना लेता है। उतना ही क्रियाशील बना देता है उसे। आलस्य, प्रमाद इत्यादि से बहुत दूर रखता है वह संपूर्ण परमात्मा की तरह कर्मयोगी बन जाता है और हर वक्त कर्मरत रहता है। किसी न किसी प्रकार से परमात्मा उस से कुछ न कुछ करवाता रहता है। ये समर्पण है। ये शरणागति है।

एक दही के मटके में दो मेंडक गिर गए। दोनों उछल कूद कर रहे हैं, बाहर निकलने के लिए, इस प्रयास में वे दही से लथपथ हो जाते हैं। बाहर निकलना दोनों के लिए मुश्किल हो जाता है। एक अपने संघर्ष को जारी रखता है तो दूसरा मटके के अन्दर की दीवार के साथ बिल्कुल चिपक कर पड़ा रहता है। एक मेंढक अपनी उछल कूद जारी रखता है। हर प्रकार के साधक हैं, एक साधक ने समर्पण की स्थिति को स्वीकार कर लिया है वह दीवार के साथ लग गया है। दूसरा अपने संघर्ष में लगा हुआ है कि मुझे साधना करनी है, मुझे ये करना है, मुझे वो करना है मुझे इतने लाख जाप करना है, मुझे इतने का अनुष्ठान लेना है इत्यादि इत्यादि। ये आरती करनी है, वो आरती करनी है, ये करना है, वो करना है, ये संघर्षरत है, लगा हुआ है। मेंढक के उछल कूद करने से परिणाम क्या हुआ? परिणाम ये हुआ कि इसके उछल कूद करने से दही लस्सी बन गया। उछल कूद करते–करते उसमें से मक्खन निकलना ही था। एक मक्खन का ढेला बन गया। संघर्ष करता–करता मेंढक मर गया है। संघर्षरत जो भी रहेगा, एक न एक दिन इसी प्रकार ही उसकी दुर्गति हो ही जाती है। वह मौत को प्राप्त हो गया है, दूसरा जो प्रतीक्षा कर रहा है जो दीवार के साथ लगा हुया है उसे मौका लगा है कि उसने देखा मक्खन का ढेला इतना सारा इकट्ठा हो गया है इसलिए उस पर पाँव रख कर तो ऊपर से छलांग लगाई है, मटके से बाहर निकल गया। ये समर्पण है ।

समर्पण में एक ही चीज का विश्वास हुआ करता है कि जो कुछ मैंने करना था वह हो गया, जो कुछ परमात्मा ने मुझ से करवाना था वह हो गया अब परमात्मा की बारी है करने की। परमात्मा को मौका देता है, इसे समर्पण कहा जाता है। इसे शरणागति कहा जाता है। बहुत बल चाहिए, बहुत विश्वास चाहिए इसके लिए कि अब परमात्मा मुझे तेरा ही सहारा है, मैं तेरे ही भरोसे जी रहा हूँ। पुनः अर्ज करूँगा जब व्यक्ति ये महसूस करने लग जाए इक छोटा बच्चा है, नन्हा बच्चा आपको लगता है न वह नन्हा बच्चा शिशु कुछ नहीं कर रहा, रो रहा है, हाथ–पाँव मार रहा है। नन्हा बच्चा सब कुछ कर रहा है लेकिन हमें मालूम होता है, महसूस होता है कि वह कुछ नहीं कर रहा। ऐसी ही स्थिति है, शरणागति। ऐसी ही स्थिति है जब बच्चा रोता है, कभी हँसता है, कभी इस प्रकार के हाथ मारता है, कभी टाँगें इस प्रकार से हिलाता है, कर तो सब कुछ रहा है लेकिन माँ

को पता है कि ये बच्चा कुछ नहीं कर सकता, कुछ नहीं कर रहा। मेरी शक्ति के बिना, मेरे बल के बिना ये मुझे ही पुकार रहा है। ये हाथ मारता है तो भी मुझे पुकारता है, पाँव मारता है तो भी मुझे पुकारता है, रोता है तो भी मुझे पुकारता है, हँसता है तो भी मुझे ही पुकारता है तो मुझे ही याद करता है। कभी मुझे तंग करता है तो कभी इसको गुस्से में आकर, इस प्रकार से मैं इसे जमीन पर भी पटक देती हूँ तो भी ये मेरी ओर ही निहारता है– ऐसी स्थिति को ही शरणागति कहा जाता है, समर्पण कहा जाता है।

उसे केवल एक मात्र सहारा है - परमात्मा का सहारा। इसे समर्पण कहा जाता है। कुछ न करने की स्थिति। इसका अर्थ ये नहीं समझिएगा कि व्यक्ति निष्क्रिय हो जाता है, व्यक्ति हाथ पाँव मारना बंद कर देता है। नहीं, यह बिल्कुल सत्य नहीं है। ये शरणागति के प्रति, ये समर्पण के प्रति भ्रांति है हमारी। इसे दूर करने की आवश्यकता है।

अनन्य भाव की चर्चा चल रही है, अनन्य भाव में जहाँ अन्य कोई नहीं वह अनन्य। जहाँ दूसरा कोई नहीं अनन्य। उस व्यक्ति को किसी प्रकार का, किसी दूसरे का आश्रय नहीं है, न धर्म का आश्रय, न बल का आश्रय, न परिवार का आश्रय, न संसार का आश्रय, न सांसारिक वस्तुओं का आश्रय है।

ज्ञान कहता है पाँच विषय हैं, भक्त कहता है नहीं परमात्मा के अतिरिक्त जो कुछ भी दिखाई देता है वह सभी विषय हैं। इसलिए उन सबके प्रति वह उदासीन रहता है संसार की वस्तुओं के प्रति उदासीन रहता है, संसार के व्यक्तियों के प्रति उदासीन रहता है, अपने प्रति उदासीन रहता है और अपनों के प्रति उदासीन रहता है। वह किसी के साथ चिपकता नहीं है, उसे पता है कि मुझे अनन्य बन के रहना है और अनन्य का अर्थ है जहां अन्य कोई नहीं है। मुझे इस प्रकार से अनन्यता निभानी है परमात्मा के साथ जुड़ा रहना है।

"दीन–हीन जन जान कर शरण पड़े को तार" स्वामी जी महाराज ने लिखा मैं दीन हूँ, हीन हूँ, महाराज आपकी चरण–शरण में आ गया हूँ। एक मात्र यही सहारा है यही आश्रय है कि अब आप अपना विरद विचारियेगा और मेरा उद्धार कीजिएगा। बस जहां परमात्मा की, उस मातेश्वरी की, करुणा के अतिरिक्त, उसके वात्सल्य के अतिरिक्त, उसकी कृपा के अतिरिक्त, दूसरा कोई सहारा नहीं होता – उसे ही अनन्यता कहा जाता है।

अनन्य भक्त कभी किसी से कुछ नहीं चाहता है। आज एक अनन्य भक्त के पास देवदूत आ गए हैं। देवदूत ने आकर राम–राम किया, प्रणाम किया। ''प्रणाम भक्त बहुत प्यारे हो, तेरी संगति में कुछ दिन गुजारना चाहता हूँ'' देवदूत ने कहा। अनन्य भक्त हाथ जोड़ता है,''प्रणाम देवदूत! क्षमा करें मैं जिसकी संगति में हूँ पर्याप्त है। मुझे और किसी की संगति की आवश्यकता नहीं।'' देवदूत का सब कुछ हिल गया। सारे का सारा व्यक्तित्व उसका, अस्तित्व उसका हिल गया। कोई मुझे भी न कहने वाला है और वह है अनन्य भक्त। ये परमात्मा के सहारे रहता है, जो परमात्मा की संगति में रहता है, जो परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे के आश्रित नहीं है, जो परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे को चाहता नहीं है, जिसकी परमात्मा के अतिरिक्त कोई और माँग नहीं है – वह अनन्य है, वह परमात्मा का अनन्य भक्त है, इसी को

अनन्यता कहा जाता है।

सिकन्दर दी ग्रेट, महान सिकन्दर आज एक संत महात्मा के पास गए हैं अपना परिचय दिया ''मैं सिकन्दर अलेक्जेंडर दी ग्रेट''। संत महात्मा ने कहा,''तरस आता है तुझे देख कर, ऐसी बात कहते हुए तुझे शर्म नहीं आती। अपने आपको महान कहते हो, मानो उस महान से तुम्हारा कोई परिचय नहीं है जो महान है। ''सिकंदर को बात समझ नहीं आयी लेकिन उसे इस प्रकार का उत्तर बहुत अच्छा लगा। कहा,'' महात्मा मैं कुछ आपको देना चाहता हूँ, कुछ मेरे से माँग लीजिएगा। मेरे पास बहुत कुछ है, मैंने बहुत लूटमार की है, बहुत कुछ है मेरे पास जो तू चाहेगा मैं वही देने को तैयार हूँ।'' संत महात्मा कहते हैं,''मेरी लँगोटी फट गई है आपके पास दूसरी है तो मुझे दे दो।'' सिकन्दर बहुत शर्मिंदगी महसूस कर रहे हैं, ''इतने महान से इतनी छोटी सी चीज माँग रहे हो महात्मा, ये क्या है कोई बड़ी चीज माँगो।'' संत कहते हैं, ''छोटों से छोटी चीज ही माँगी जाती है। तू इतना छोटा है तेरे पास कोई बड़ी चीज है नहीं। बड़ी चीज उस बड़े के पास है और उस बड़े से तेरा कोई परिचय नहीं, मेरा है। मुझे आवश्यकता होगी तो मैं उसी से माँग लूँगा।'' मुँह लटका के सिकंदर लौट गया है। जहाँ परमात्मा के अतिरिक्त न कोई माँग है और परमात्मा के अतिरिक्त कोई दूसरे से कुछ माँगने की भी कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती तो इसी को अनन्यता कहा जाता है। इसी को समर्पण कहा जाता है। बहुत–बहुत उच्च कोटि के अनन्य भक्त हुए हैं।

लक्ष्मण जी महाराज, हनुमान जी महाराज, भरत जी महाराज ये सब परमात्मा के अनन्य भक्त हैं। तीनों में क्या अंतर है, तीनों की अनन्यता इस प्रकार की है, तीनों ही अनन्य हैं इसका अर्थ है अनन्यता में भी कुछ थोड़े–थोड़े भेद हैं। क्या भेद हैं, ये अपने भक्ति के माध्यम से, अपने आचरण के माध्यम से समझाते हैं।

वृंदावन में एक शोभा यात्रा निकली है। वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के मुख्य, शोभा यात्रा, परिक्रमा के लिए निकले हैं। सायंकाल का समय है, नंद गाँव में सब बहुत धूम धाम से इकट्ठे नाच रहे हैं, गा रहे हैं, भजन कीर्तन हो रहा है। हर कोई आनंद विभोर है। नंद गाँव का ही एक गुसाँई सिर पर लक्कड़ का गट्ठर उठाए हुए आया है। देखा बहुत रौनक है गट्ठर को नीचे फेंका और हाथ में एक डंडा था उस डंडे को लेकर तो खड़े हो गए। वल्लभाचार्य जो उस सम्प्रदाय के head थे, मुख्य थे उन्होंने पूछा, ''कौन हैं आप?'' अजीब ढंग से ये व्यक्ति खड़ा हो गया है पूछा,'' कौन हैं''। उत्तर देने की अपेक्षा, उसने प्रश्न किया है,'' आप कौन हैं?'' ''इस सम्प्रदाय के मुख्य उत्तर देते हैं, हम अनन्य हैं'। वह उत्तर देता है, ''हम फनन्य हैं।'' अनन्य क्या होता है? फनन्य क्या होता है? एक दूसरे के साथ प्रश्न जारी हैं। ''हम फनन्य हैं'' तो इन्होंने पूछा फनन्य क्या होता है तो फनन्य कहने वाले ने पूछा, ''अनन्य क्या होता है?'' अनन्य की परिभाषा ये गोसाईं जो बहुत पढ़े लिखे हैं, किसी सम्प्रदाय के मुख्य, हमें बताते हैं,''भगवान श्री कृष्ण के अतिरिक्त जो किसी देवी देवता, किसी व्यक्ति या किसी अन्य की पूजा नहीं करता वह अनन्य है।'' ये गुसाँई संभवतया जो अनपढ़ हैं कहते हैं,'' स्वामी जी, आचार्य जी जिसने भगवान श्री कृष्ण के अतिरिक्त कोई दूसरा नाम ही नहीं सुन रखा हुआ उसे फनन्य कहते हैं।'' कौन सी अनन्यता बेहतर है साधकजनों आप सोच विचार करो। अनन्यता में भी भिन्नता है।

(पूजनीय श्री महाराज जी का प्रवचन 17.07.2010) ■

श्रीरामशरणम्: एक ऐतिहासिक विवरण चंडीगढ़

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अर्न्तगत लेखों की अगली कड़ी)

श्रीरामशरणम् चंडीगढ़ के निर्माण से पूर्व श्री अमृतवाणी का संकीर्तन एक मंदिर में प्रत्येक रविवार को होता था।

चण्डीगढ़ जैसे आधुनिक शहर में किसी भी संस्थान के लिए भूमि प्राप्त करना अति दुर्लभ कार्य था परन्तु परम पूजनीय गुरुजनों की विशेष कृपा से ये कार्य संभव हो पाया। परम श्रद्धेय पूजनीय डॉ. विश्वामित्र जी महाराज ने स्वयं आवेदन पत्र पर हस्ताक्षर किए और ईश्वर की ऐसी उदारता हुई कि बिना किसी आपत्ति के चंडीगढ़ के 29 सैक्टर में 1000 गज की भूमि प्राप्त हो गई। तत्पश्चात् इस भवन निर्माण हेतु परम श्रद्धेय महाराज द्वारा भूमि पूजन व शिलान्यास का आयोजन हुआ। बृहस्पतिवार 24 फरवरी 2000 को इस पावन पर्व को आयोजित किया जो परम पूजनीय महाराज श्री के कर कमलों द्वारा किया गया। इस पर्व पर श्री अमृतवाणी का

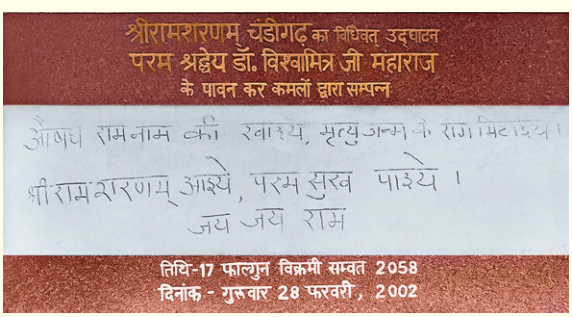

संकीर्तन एवं प्रवचन हुए थे। फिर निर्माण का कार्य आरम्भ हुआ और दो वर्षों के पश्चात यह शुभ महान कार्य प्रभु कृपा से सम्पन्न हुआ। इस दौरान श्री अमृतवाणी जी का पाठ साप्ताहिक सत्संग के रूप में राम मंदिर में होता रहा और समय–समय पर परम पूजनीय श्री महाराज जी के चंड़ीगढ़ आगमन पर विशेष सत्संगों का आयोजन होता रहा। परम पूजनीय महाराज जी की कृपा से इन सत्संगों में भारी मात्रा में संगत सम्मिलित होती थी एवं दीक्षा का आयोजन भी होता रहा।

अन्ततः वह शुभ घड़ी जिसकी चंडीगढ़ साधकों को बहुत बेसब्री से प्रतीक्षा थी, आ गई। पुनः बृहस्पतिवार 28 फरवरी 2002 को श्रीरामशरणम् चण्डीगढ़ का विधिवत् उदघाटन् परम पूजनीय श्रद्धेय डॉ विश्वामित्र जी महाराज के पावन कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुया।

बुधवार 27 फरवरी 2002 को परम पूजनीय श्री महाराज जी का चण्डीगढ़ आगमन हुआ और परम पूजनीय महाराज जी का स्वागत 'तिलक' के साथ हुया। परम पूजनीय श्री महाराज जी ने विशेष कक्ष जिसका नामकरण 'प्रेम निवास' रखा गया था, दीप प्रज्वलित कर के प्रवेश किया और साधकों को कृतार्थ किया। यह कक्ष अति सुन्दर पुष्पों से व रंगोली इत्यादि से सजाया गया था।

28 फरवरी को इस पल का शुभारम्भ मनाली के पंडित जी द्वारा हवन यज्ञ से हुआ और फिर परम पूजनीय महाराज जी द्वारा कन्या पूजन भी किया गया। तत्पश्चात् यहाँ पर एक विशेष plaque बनवाया गया जिसमें परम पूजनीय महाराज श्री के शुभ कर कमलों

द्वारा यह अंकित किया गया।

"औषध राम नाम की खाइए
मृत्यु जन्म के रोग मिटाइए,"
''श्री रामशरणम् आइए परम सुख पाइए"

नारियल समर्पण व द्वार पूजन के पश्चात् परम पूजनीय श्री महाराज जी एवं कलशधारी साधिका के द्वार प्रवेश के साथ श्रीरामशरणम् चण्डीगढ़ का उदघाटन् हुआ। भारी मात्रा में संगत पधारी थी। अमृतवाणी संकीर्तन, भजन कीर्तन के पश्चात् परम पूजनीय श्री महाराज जी के प्रवचनों द्वारा सब लाभांवित हुए और विशेष भवन का उद्घाटन हुआ और चण्डीगढ़ के साधकों को अर्पित किया गया। इस भव्य दिवस का आरम्भ 24 घंटों के अखण्ड जाप व समापन भव्य प्रीति भोज के साथ हुआ।

परमेश्वर की विशेष अनुकम्पा से उस दिन से आज तक श्रीरामशरणम् का आधुनिक भवन श्री राम की वाणी से गूंज रहा है। यहाँ सभी विशेष दिवसों पर पुष्पांजलि का आयोजन होता है और दैनिक एवं साप्ताहिक सत्संग निर्विघ्न चलते हैं और संगत परम पूजनीय गुरुजनों की इस भेंट के पूर्ण आभारी है। ■

सिमरन का प्रभाव

जैसे आप जानते हैं कि स्वामी जी महाराज जी ने अपनी लघु पुस्तक "प्रार्थना और उसका प्रभाव" में आंतरिक पुकार का वर्णन किया है। 1 जुलाई 2023 गुरदासपुर की बात है, जब मेरे पिता जी ने बाजार जाने के लिए स्कूटी की चाबी लेने के लिए जैसे ही हाथ बढ़ाया वे अचानक ही करंट की चपेट में आ गए। करंट इतना जबरदस्त था कि देखते ही देखते वो अपनी सुधबुध खो बैठे। चारों ओर चीखों का माहोल छा गया। हमें कुछ सूझ नहीं रहा था कि अचानक माता जी बाहर की तरफ दौड़ीं और लोगों को बुलाने के लिए आवाज लगाई। इतने में उन्होंने मीटर बंद कर दिया और पिता जी बहुत गहरे shock में चले गए। लेकिन हम सब महाराज श्री को बार बार पुकारने लगे। चारों ओर बस राम–राम की गूंज गूंजने लगी। हमें विश्वास था कि महाराज जी कोई अनहोनी होने ही नहीं देंगे। पता नहीं उन्होंने कैसे हमें शक्ति दी और हमने आशा नहीं छोड़ी और एक दम से छाती पर पम्पिंग करनी शुरू कर दी ताकि वे होश में आयें। ये सब राम कृपा से ही हो रहा था। करंट ने तब छोड़ा जब साँसें बंद हो गईं, शरीर ठंडा पड़ गया और अकड़ गया। 40–50 बार पम्पिंग के बाद झटका लगने पर गहरी सांस ले के आँखें खोलीं तो सब उनको कमरे में ले आए। हम सबने उस समय महसूस किया कि सचमुच राम जी ने हमारी आंतरिक पुकार को सुना और ये अनहोनी होने न दी। ■

Divine Embodiment: My Guru

Param Pujniya Prem Ji Maharaj is my Guru, my Mentor, my Guide and Embodiment of the Divine for me. His words are like nectar from heaven, his loving gaze, is the balm for every wounded soul, his healing touch is a miracle cure for every physical, mental and emotional issue.

Many a times I have gone crying to him and come back smiling, relieved of all burdens. He is a Guru of few words but whatever he spoke was meaningful. I have immense faith in him. Whenever he said 'Parmeshwar Kripa Karengey' I knew my problems would get resolved. His words are the words of God for me. His presence enough to fill me with calm and peace.

Today also his chanting of Jai Shri Ram rings in my ears transporting me to another heaven. His presence envelops me with love and peace. I have never felt the need to look beyond Him for divinity. He was and still is the Divine Presence for me. ■

गुरुदेव की प्रार्थना

सन 1985 की बात है जब मेरी उम्र लगभग 35 वर्ष की थी। मेरे युटरस में बहुत बड़ी रसौली (ट्यूमर) और 2 छोटी रसौलियां हो गयी थीं। मेरे डाक्टर ने सर्जरी की सलाह दी। मैं पूज्य श्री प्रेम जी महाराज से पूछने गयी तो उन्होंने झट से कहा कि कोई सर्जरी नहीं करानी है। "आप होमियोपैथिक औषधि का सेवन करो। ठीक हो जाओगे।" मेरा डाक्टर महाराज जी को जानता था। वह बंगाली डाक्टर था। वह पूज्यश्री महाराज को 'गुरुदेव' बुलाता था। कहा कि "मैने कभी नहीं सुना कि इतना बड़ा ट्यूमर होमियोपैथिक दवाई से ठीक होता होगा। चलो गुरुदेव ने कहा है तो इंतजार कर लेते हैं।"

एक साधिका ने मुझे अच्छी महिला होमियोपैथिक डॉक्टर से मिलवाया। 8 महीने के लिये उसकी औषधि का सेवन किया। प्रेम जी महाराज ने पूछा "किसकी दवाई का सेवन कर रहे हो?" डाक्टर का नाम बताया। कहने लगे "ठीक है।" औषधि उस महिला डाक्टर की, प्रार्थना मेरे गुरुदेव की। 8 महीने के बाद उसी नामी बंगाली डाक्टर ने पूर्णरूप से मुझे स्वस्थ् घोषित कर दिया । जो डाक्टर के लिये चमत्कार तो था ही परन्तु मेरे लिये तो चमत्कार के साथ गुरुकृपा का सबसे बड़ा उदाहरण था। जय गुरुदेव। ■

परम गुरु

मैंने 1971 मे प्रेम जी महाराज से दीक्षा ली थी। यह घटना 1973 की है। मुझे रात को सपने में मेरी एक साधिका सखी पूछती है कि आपके गुरु कौन हैं? मैं सोच रही थी कि कैसे उत्तर दूँ कि स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के शिष्य प्रेम जी महाराज हैं या वह स्वयम्। इतने में तेजोमय प्रकाश में स्वामी जी स्वयम् प्रकट हो गये। मैने अपनी सखी को कहा "यह है मेरे गुरुदेव, यह है मेरे गुरुदेव" उसने भी कहा, "मेरे गुरुदेव भी यही है।" फिर स्वामी जी जो तेजोमय प्रकाश में प्रकट हुए थे लुप्त हो गये। उस सुन्दर स्वपन से मेरी नींद खुल गयी।

स्नान आदि कर के जब मैं रिंगरोड से श्री राम शरणम् जा रही थी तब पूज्य डॉ. विश्वामित्र जी महाराज स्कूटर से श्री रामशरणम् से कहीं जा रहे थे। उन्होंने स्कूटर रोक कर मुझ से पूछा कि "क्या आपको कभी स्वामी जी का स्वप्न आया है?" मैने बड़े उत्तेजित हो कर कहा, "आज ही आया, आज ही आया।" कहने लगे कि मुझे आज प्रेम जी महाराज से मिलकर जाना है। सत्संग के बाद मिलने गयी। उन्होंने मुझे स्वामी जी महाराज का एक चित्र भेंट किया। तब चित्र बुकशॉप में नहीं मिलते थे। मुझे स्वयं प्रेम जी महाराज के हाथों से श्री स्वामी जी का चित्र प्राप्त हुआ। मेरे लिये इससे बड़ी कृपा क्या हो सकती थी। मुझे लगा कि मेरे गुरुजनों ने मुझे शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया है। मैं कृतकृत, व धन्य–धन्य हो गयी सद्गुरु प्राप्त कर के। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
(जून से सितम्बर 2023)

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **किश्तवाड़,** जम्मू व कश्मीर में 24 जून 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 26 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भद्रवाह,** जम्मू कश्मीर में 25 जून 2023 को बिशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 83 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 28 जून से 3 जुलाई 2023 तक गुरु पूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा) एवं परम पूजनीय डॉ विश्वामित्र जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में पाँच रात्रि साधना सत्संग का आयोजन हुया जिस में 19 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली** में 3 जुलाई 2023 गुरु पूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा) को 89 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली** में 26 जुलाई 2023 को साप्ताहिक सत्संग के बाद 25 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली** में 27 से 29 जुलाई 2023 तक परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **काठमंडू,** नेपाल में 4 से 6 अगस्त 2023 तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुया जिसमें 43 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली** में 6 अगस्त 2023 को साप्ताहिक सत्संग के बाद 24 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रोहतक** हरियाणा में 12 से 13 अगस्त 2023 तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **रेहटी** जिला सीहोर, मध्य प्रदेश में 14 अगस्त 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 291 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सरदारशहर,** राजस्थान में 26 अगस्त 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 344 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **आलमपुर,** हिमाचल प्रदेश में 3 सितम्बर 2023 को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 30 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **औबेदुलागंज** जिला रायसेन, मध्यप्रदेश में 7 सितम्बर 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 200 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली** में 10 सितम्बर 2023 को साप्ताहिक सत्संग के बाद 11 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रिवाड़ी,** हरियाणा में 16 से 17 सितम्बर 2023 तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **पठानकोट,** पंजाब में 23 से 24 सितम्बर 2023 तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ। 24 सितम्बर को नाम दीक्षा हुई।

आगामी कार्यक्रमों का विवरण

- **हरिद्वार** में 30 सितम्बर से 3 अक्तूबर 2023 तक परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में तीन रात्रि साधना सत्संग का आयोजन होगा।
- **श्रीरामशरणम् दिल्ली** में नव वर्ष के उपलक्ष्य में 31 दिसम्बर 2023 को रविवार के साप्ताहिक सत्संग के बाद श्री रामायण जी के पाठ का शुभारम्भ होगा जिसकी पूर्ति 1 जनवरी 2024 को प्रातः के दैनिक सत्संग के साथ होगी।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **नागौद** मध्य प्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है। ■

How to be the best devotee of Shree Ram

Just like we earnestly go to school, do our home work, and put in our best effort for exams to find success at school. Similarly, we need to make whole-hearted effort to have a beautiful, honest and complete connection with Shree Ram.

Below are some helpful suggestions on how you can develop a strong bond with Shree Ram.

1. Daily jaap and remembrance of 'Ram-Naam Mantra'. Remember how we learned in the last Satya Sahitya to sit cross-legged in a peaceful place, taking a long breadth in and singing RAM in a melodious love-filled voice as you breathe out. Please continue to practice that everyday. The more you lovingly call and remember Ram, the more love you will experience in your heart. You may even use a small 'Maala' if that helps you with chanting Ram.
2. Remember Ram while performing every action in your daily life. Wish and greet him good morning everyday as you open your eyes. Chant His name while taking a bath or waiting for the school bus. Thank Him for the all happy moments you experience in your day. Ask Him for strength and support when you experience any difficulty. The more you remember Him with honesty and deep love, the more you can feel Him helping and protecting you. Remember to wish Him good night and have a love-filled conversation with Him before you sleep.
3. Listen and sing along to the Amritvani as often as possible. Ask your family members to explain the different verses to you. Read by yourself or ask an adult to read 'Amritvani Vyakhya' to you so you can learn and understand the verses that are being sung.
4. Be an altruistic server. Being altruistic means to be selfless or unselfish. This allows you to be loving towards everyone around you. Help everyone with a generous heart. Service to all humans is considered to be an extension of Ram's devotion.

The above points were inspired from the book *Upaasak Kaa Aantrik Jeevan (Inner Life of The Devotee)* written by Shree Swami Satyanand Ji Maharaj.

Activity:

Below are a few images that connect to the 4 points described above. Try and match the corresponding point number in the empty box provided next to each image.

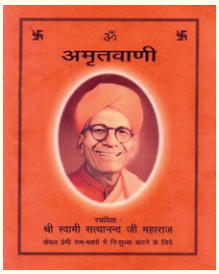

Sadhna Satsang (October to December 2023)

Haridwar	30 September to 3rd October	Saturday to Tuesday
Haridwar (Ramayani)	15 to 24 October	Sunday to Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Saturday to Tuesday
Kapurthala	17 to 20 November	Friday to Monday

कृपया साधना सत्संग के लिए नाम 60 दिन पहले भेजें।

Naam Deeksha in Other Centers (October to December 2023)

Place	Date	Day
Patlikul Near Manali	05-Oct	Thursday
Gurdaspur	8 October	Sunday
Sujanpur	29 October	Sunday
Jammu	5 November	Sunday
Kapurthala	19 November	Sunday
Kathua	25-Nov	Saturday
Sampla	26-Nov	Sunday
Melbourne	3 December	Sunday
Amritsar	3 December	Sunday
Bhopal	10 December	Sunday
Surat	17 December	Sunday
Bhiwani	24 December	Sunday
Ujjain	25-Dec	Monday

Open Satsang (October to December 2023)

Patlikul (HP) Near Manali	05 October	Thursday
Gurdaspur	6 to 8 October	Friday to Sunday
Sujanpur	27 to 29 October	Friday to Sunday
Jammu	3 to 5 November	Friday to Sunday
Kathua	25 November	Saturday
Melbourne (Australia)	1 to 3 December	Friday to Sunday
Amritsar	3 December	Sunday
Surat	16 to 17 December	Saturday to Sunday
Bhiwani	23 to 24 December	Saturday to Sunday

Naam Deeksha In Shree Ram Sharnam Delhi (October to December 2023)

October	15	Sunday
November	26	Sunday
December	10	Sunday

Poornima (October to December 2023)

October	28th	Saturday
November	27th	Monday
December	26th	Tuesday

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com
E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924